॥ॐ॥

॥ॐ श्री परमात्मने नमः ॥

॥श्री गणेशाय नमः॥

वैदिक शांतिपाठ संग्रह

विषय-सूची

वैदिक शान्तिपाठ 3
चतुर्वेद-ध्यान 8

वैदिक शान्तिपाठ

ॐ शं नो मित्रः शं वरुणः। शं नो भवत्वर्यमा।
शं न इन्द्रो बृहस्पतिः। शं नो विष्णुरुरुक्रमः।
नमो ब्रह्मणे। नमस्ते वायो। त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि।
त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि। ऋतं वदिष्यामि।
सत्यं वदिष्यामि। तन्मामवतु । तद्वक्तारमवतु।
अवतु माम्। अवतु वक्तारम्।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।। १।।

कृष्ण यजुर्वेदीय

ॐ मित्र हमारे लिये सुख करनेवाले हों। वरुण हमारे लिये सुख करनेवाले हों। अर्यमा हमारे लिये सुख करनेवाले हों। इन्द्र और बृहस्पति हमारे लिये सुख करनेवाले हों। जिनके चरण कमल अत्यंत विशाल हैं, वे विष्णु हमारे लिये सुख करनेवाले हों। ब्रह्म को नमस्कार है। हे वायु ! तुम्हें नमस्कार है। तुम ही प्रत्यक्ष ब्रह्म हो। तुम्हीं को मैं प्रत्यक्ष ब्रह्म कहूँगा। तुम्हीं को ऋत (शास्त्रोक्त निश्चित अर्थ) कहूँगा। तुम्हीं को सत्य कहूँगा। वह ब्रह्म मेरी रक्षा करे। वह आचार्यकी रक्षा करे । रक्षा करे मेरी। रक्षा करे आचार्य की। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।[1]

ॐ सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहै ।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥२॥

कृष्ण यजुर्वेदीय

[1] दिन के अभिमानी देवताका नाम मित्र है, रात्रिके अभिमानी देवताका नाम वरुण है, सूर्यमण्डल और नेत्रके अभिमानी देवताका नाम अर्यमा है, हाथ और बलके देवता इन्द्र हैं, वाणी और बुद्धिके देवता बृहस्पति हैं, पदोंके देवता विष्णु हैं, सूत्रात्मक वायुका नाम यहाँपर ब्रह्म है और प्राणका नाम वायु है।

ॐ वह प्रसिद्ध परमेश्वर हम शिष्य और आचार्य दोनों की साथ-साथ रक्षा करे। हम दोनों को साथ-साथ विद्या के फ़ल का भोग कराये। हम दोनों एक साथ मिलकर वीर्य यानी विद्याबल की प्राप्ति के लिये सामर्थ्य प्राप्त करें। हम दोनों का पढ़ा हुआ तेजस्वी हो, हम दोनों परस्पर द्वेष न करें।

ॐ यश्छन्दसामृषभो विश्वरूपः छन्दोभ्योऽध्य मृतात्संबभूव।
स मेन्द्रो मेधया स्पृणोतु। अमृतस्य देव धारणो भूयासम्।
शरीरं मे विचर्षणम्। जिह्वा मे मधुमत्तमा। कर्णाभ्यां भूरि विश्रुवम्।
ब्रह्मणः कोशोऽसि मेधया पिहितः। श्रुतं में गोपाय।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥३॥

कृष्ण यजुर्वेदीय

ॐ जो प्रणव छन्दों में श्रेष्ठ हैं, सर्वरूप है, अमृत रूप वेदों से प्रधान रूप से आविर्भूत हुआ है, वह प्रणव-ॐकार रूप इन्द्र (परमेश्वर) मुझे बुद्धिसे पुष्ट करे अर्थात् मुझको बुद्धिका बल दे।

हे देव! मैं अमृत (ब्रह्मज्ञान) का धारण करनेवाला होऊँ। मेरा शरीर समर्थ (रोगरहित) रहे। मेरी जिह्वा मधुरभाषिणी हो, कानों से मैं बहुत सुनँ।

तुम ब्रह्मके कोश हो। लौकिक बुद्धिसे ढके हुए हो। जो कुछ मैंने सुना है, उसकी रक्षा करो। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।। ३ ।।

ॐ अहं वृक्षस्य रेरिवा। कीर्तिः पृष्ठं गिरेरिव ।
ऊर्ध्वपवित्रो वाजिनीव स्वमृतमस्मि । द्रविणसवर्चसम्।
सुमेधा अमृतोक्षितः । इति त्रिशङ्कोर्वेदानुवचनम्।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥४॥

कृष्ण यजुर्वेदीय

ॐ कटना या नष्ट हो जाना जिसका स्वभाव है, उस संसार रूप वृक्ष का मैं अन्तर्यामी रूप से प्रेरक हूँ, मेरी कीर्ति पर्वत-शिखर के समान उच्च है। मैं ऊर्ध्व पवित्र हूँ अर्थात् पवित्र-परब्रह्म मेरा ऊर्ध्व-कारण है। अन्नयुक्त सूर्य में जिस प्रकार अमृत है, उसी प्रकार मैं भी शुद्ध अमृतमय हूँ। प्रकाशमान धन हूँ। सुन्दर बुद्धिवाला, मृत्युरहित और अक्षय (अविनाशी) हूँ। ये वचन वेद के जाननेके पश्चात् त्रिशंकु के कहे हुए हैं।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।।४।।

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥५॥

शुक्ल यजुर्वेदीय

ॐ वह (परब्रह्म) पूर्ण है, यह (कार्यब्रह्म) भी पूर्ण है; क्योंकि पूर्ण से पूर्ण ही निकलता है, (प्रलयकाल में) पूर्ण (कार्यब्रह्म) का पूर्णत्व लेकर पूर्ण (परब्रह्म) ही शेष रहता है।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ ५ ॥

ॐ आप्यायन्तु ममाङ्गानि वाक् प्राणश्चक्षुः
श्रोत्रमथो बलमिन्द्रियाणि च सर्वाणि।
सर्वं ब्रह्मौपनिषदं माह ब्रह्म निराकु मा मा ब्रह्म
निराकरोदनिराकरण मस्त्वनिराकरणं मेऽस्तु ।
तदात्मनि निरते य उपनिषत्सु धर्मास्ते
मयि सन्तु ते मयि सन्तु।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ ६॥

सामवेदीय

ॐ मेरे अंग, वाणी, प्राण, नेत्र, श्रोत्र, बल और सब इन्द्रियाँ पुष्ट हों। सब उपनिष वेद्य ब्रह्म है। मैं ब्रह्म का तिरस्कार न करूं, ब्रह्म मेरा तिरस्कार न करे, हम दोनों की परस्पर प्रीति हो, परस्पर प्रीति हो, वेदान्तों में प्रकाशित किये हुए जो धर्म हैं, ब्रह्मात्मामें निरन्तर प्रेम करनेवाले मुझमें हों, मुझमें वे हों।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।। ६ ।।।

ॐ वाङ् मे मनसि प्रतिष्ठिता। मनो में वाचि प्रतिष्ठितमाविरावीर्म एधि।
वेदस्य म आणीस्थः श्रुतं में मा प्रहासीः।
अनेनाधीतेनाहोरात्रान्सन्दधाम्युतं वदिष्यामि।
सत्यं वदिष्यामि । तन्मामवतु । तद्वक्तारमवतु।
अवतु मामवतु । वक्तारमवतु वक्तारम् ।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ ७॥

ऋग्वेदीय

ॐ मेरी वाणी मन में प्रतिष्ठित हो, मेरा मन वाणी में प्रतिष्ठित हो। हे स्वप्रकाश ब्रह्म चैतन्यात्मन्! मेरे लिये अविद्या दूर करने को आप प्रकट हों, वेद का तत्त्व मेरे लिये लाइये। मेरा सुना हुआ मुझे न छोड़े। इस पढ़े हुए को मैं दिन-रात धारण करूँ। परमार्थ में सत्य बोलँ। व्यवहारमें सत्य बोलूं। वह (ब्रह्म) मेरी रक्षा करे, वह आचार्यकी रक्षा करे। रक्षा करे मेरी, रक्षा करे आचार्य की, रक्षा करे आचार्य की।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।।७।।

ॐ भद्रं नो अपि वातय मनः।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ ८॥

ऋग्वेदीय

ॐ हमारा कल्याण हो, मन पवित्र कीजिये। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ ८ ॥

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवासस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः ॥

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः । स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥९॥

अथर्ववेदीय

ॐ हे देवगण ! हम कानों से कल्याणरूप वचन सुनें। यज्ञ करने में समर्थ होकर हम नेत्रों से शुभ-दर्शन करें । सुदृढ़ अंगों (अवयवों) एवं शरीरों से स्तवन करने वाले हम

लोग देवताओं के लिये हितकर आयु का उपभोग करें । महान् कीर्तिवाला इन्द्र हमारा कल्याण करे। विश्व का जाननेवाला सूर्य हमारा कल्याण करे। आपत्तियों के लिये चक्र के समान घातक गरुड हमारा कल्याण करे। बृहस्पति हमारा कल्याण करे।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ ९ ॥

ॐ यो ब्रह्माणं विदधाति पूर्वं यो वै वेदांश्च प्रहिणोति तस्मै।
तः ह देवमात्मबुद्धिप्रकाशं मुमुक्षुर्वे शरणमहं प्रपद्ये॥
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ १०॥

कृष्णयजुर्वेदीय

ॐ जो पूर्वमें ब्रह्माको उत्पन्न करता है और जो उसके लिये वेदों को देता है, आत्मबुद्धि के प्रकाशक उस प्रसिद्ध देव की शरण में मैं मोक्षकी इच्छा से जाता हूँ।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ १० ॥

चतुर्वेद-ध्यान

ऋग्वेद-ध्यान

ऋग्वेदः श्वेतवर्णः स्याद् द्विभुजो रासभाननः।
अक्षमालायुतः सौम्यः प्रीतश्चाध्ययनोद्यतः ॥

भगवान् ऋग्वेद श्वेत वर्णवाले हैं। उनकी दो भुजाएँ हैं और मुखाकृति गर्दभ के समान है। वे अक्षमालासे समन्वित, सौम्य स्वभाव वाले, प्रसन्न रहनेवाले तथा सदा अध्ययनमें निरत रहनेवाले हैं।

यजुर्वेद-ध्यान

अजास्यः पीतवर्णः स्याद्यजुर्वेदोऽक्षसूत्रधृक् ।
वामे कुलिशपाणिस्तु भूतिदो मङ्गलप्रदः॥

भगवान् यजुर्वेद बकरे के समान मुखवाले, पीतवर्णवाले तथा अक्षमाला धारण करनेवाले हैं। वे अपने बायें हाथ में वज्र धारण किये हैं। वे सभी प्रकार का ऐश्वर्य तथा मंगल प्रदान करनेवाले हैं।

सामवेद-ध्यान

नीलोत्पलदलाभासः सामवेदो हयाननः ।
अक्षमालान्वितो दक्षे वामे कम्बुधरः स्मृतः ॥

जो नीलकमलदल के समान कान्तिवाले हैं, अश्व के समान मुखवाले हैं तथा जो अपने दाहिने हाथ में अक्षमाला लिये हुए हैं और बायें हाथ में शंख धारण किये हैं, वे सामवेद भगवान् कहे गये हैं।

अथर्ववेद-ध्यान

अथर्वणाभिधो वेदो धवलो मर्कटाननः ।

अक्षसूत्रं च खट्वाङ्गं बिभ्राणो यजनप्रियः॥

जो उज्ज्वल वर्णवाले तथा बन्दर के समान मुखवाले हैं, जिन्होंने अक्षमाला और खट्वांग धारण किया है, जिन्हें यज्ञ कर्म अत्यन्त प्रिय हैं, वे अथर्वण नाम के वेद भगवान् कहे गये हैं।

संकलनकर्ता:

श्री मनीष त्यागी

संस्थापक एवं अध्यक्ष

श्री हिंदू धर्म वैदिक एजुकेशन फाउंडेशन

www.shdvef.com

।।ॐ नमो भगवते वासुदेवाय:।।